www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.	
वर्ष: 73	अंक : 25
सृष्टि संवत् 1960853117	
18 सितम्बर, 2016	
दयानन्दब्द 193	
वार्षिक : 100 रू.	
आजीवन : 1000 रू.	
दूरभाष : 2292926, 5062726	

जालन्धर

वर्ष–73, अंक : 25, 15–18 सितम्बर 2016 तदनुसार 3 आश्विन सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पुरोहित की घोषणा

ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम्।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः।।
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम्।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम्।।

–अथर्व० ३।१९।१, २

शब्दार्थ–मे = मेरा **इदम्** = यह **ब्रह्म** = ज्ञान–बल **संशितम्** = भली प्रकार तीक्ष्ण किया हुआ है। **वीर्यम्** = वारक शक्ति तथा **बलम्**= सम्बल भी **संशितम्** = भली प्रकार तीक्ष्ण है। उनका **संशितम्**= भली प्रकारे तीक्ष्ण किया हुआ **क्षत्रम्** = क्षात्रबल **अजरम्** = जीर्ण न होने वाला **अस्तु** = है, **येषाम्** = जिनका मैं **जिष्णुः** = जयशील **पुरोहितः** = पुरोहित **अस्ति** = हूँ। **अहम्** = मैं **एषाम्** = इनके **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **सं** + **स्यामि** = एक सूत्र में बाँधता हूँ और इनके **ओजः** = ओज, तेज **वीर्यम्** = वारक शक्ति तथा **बलम्** = रक्षा के सामर्थ्य को **सम** = एक सूत्र में बाँधता हूँ। अहम् = मैं **अनेन** = इस **हविषा** = सामग्री द्वारा **शत्रूणाम्** = शत्रुओं की **बाहून्** = भुजाओं को **वृश्चामि** = काटता हूँ।

व्याख्या–राष्ट्र के पुरोहित = नायक में किन भावों का समावेश हो, यह संक्षेप से इन मन्त्रों में अङ्कित है। पुरोहित में सब प्रकार का बल होना चाहिए–क्या ब्राह्मबल और क्या क्षात्रबल। वैदिक पुरोहित की गम्भीर घोषणा सचमुच सबके मनन करने योग्य है–'**संशितं म इंद ब्रह्म**' = मेरा यह ब्राह्मबल सुतीक्ष्ण है, केवल ब्राह्मबल ही नहीं, प्रत्युत **संशितं वीर्यं बलम्** = वारक सामर्थ्य और रक्षण–शक्ति भी तेज़ है। दूसरों पर आक्रमण करके उनको भगा देने का नाम वीर्य और दूसरों से आक्रान्त होने पर अपनी रक्षा कर सकने को बल कहते हैं। क्षात्रबल के ये दो प्रधान अङ्ग हैं। पूरी शान्ति वहीं होती है–'**यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह**' [य० २०।२५] = जहाँ ब्राह्म बल और क्षात्रसामर्थ्य समान गतिवाले होकर एक–साथ विचरते हैं। क्षत्रिय में केवल क्षात्रबल है, किन्तु ब्राह्म में ब्राह्मण तथा क्षात्रबल दोनों हैं। यही ब्राह्मण का उत्कर्ष हैं। क्षात्रबलविहीन ब्राह्मण सचमुच हीन है, वह पूर्ण ब्राह्मण नहीं है। जिस राष्ट्र का नेता वेदानुकूल होगा, सचमुच उसका क्षात्रतेज अजर = अक्षीण = अहीन ही रहेगा।

राष्ट्र को सङ्गठित रखना तथा राष्ट्र के ओज–वीर्य आदि की रक्षा करना पुरोहित का काम है–

'**समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम्**'–मैं इनके राष्ट्र को तथा ओज, बल, वीर्य को एक सूत्र में पिरोके रखता हूँ। नेता को चाहिए कि समूचे राष्ट्र के सामने एक महान् उद्देश्य रखे। इससे राष्ट्र में एकता बनी रहती है। इस एकता के रहने से ही पुरोहित कह सकेगा–'**एषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि**' [अथर्व० ३।१८।५]–मैं इनके राष्ट्र को सुवीर बनाकर बढ़ाता हूँ।

जिस प्रकार के शिक्षक होंगे, वैसे ही शिष्य होंगे। यदि शिक्षक हीनवीर्य, हतोत्साह होंगे तो राष्ट्र में उत्साह–बलादि का अभाव रहेगा। वैदिक पुरोहित तो कहता है–

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः।।

अथर्व० ३।१९।४

उनके हथियार कुठार से तीक्ष्णतर और आग से भी अधिक तीक्ष्ण हैं, इन्द्र के वज्र = बिजली से भी तेज हैं, जिनका मैं पुरोहित हूँ। उग्र पुरोहित के शिष्य सभी प्रकार से उग्र होंगे, अतः राष्ट्र की उन्नति चाहने वालों को उग्र पुरोहित उत्पन्न करने चाहिएँ।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

www.thearyasamaj.org

ईश्वर ने वेद-ज्ञान क्यों दिया, इसके कारण

ले. -पं० खुशहाल चन्द्र आर्य, C/o गोबिन्दराम आर्य अन्ड सन्स 180 महात्मा गान्धी रोड़ (दोतल्ला) कोलकता-700007

ईश्वर ने वेद-ज्ञान क्यों दिया, इसके मुख्य चार कारण है। वे इसी भाँति है।

१. ज्ञान दो किस्म का होता है। पहला स्वाभाविक ज्ञान दूसरा नैमित्तिक ज्ञान। स्वाभाविक ज्ञान खाना-पीना, सोना-जागना, हंसना-रोना तथा बच्चे पैदा करना है। यह ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक और मनुष्यों में कम होता है। कारण पशु-पक्षी इसी ज्ञान से अपना पूरा जीवन काम चलाते हैं। इसमें किये हुए कर्मों का फल नहीं मिलता। दूसरा नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सिखाने से सीखा जाता है। सिखाए बगैर इस ज्ञान का कोई महत्व नहीं। यह ज्ञान मनुष्यों में बहुत अधिक और पशु-पक्षियों में बहुत कम होता है। पशु-पक्षियों का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरता है, जैसे कुत्ते के बच्चे को आप पानी में डाल दीजिए, वह तैर कर बाहर निकल जाएगा कारण यह पशु-पक्षियों के लिए स्वाभाविक ज्ञान है और मनुष्य के बच्चे को यदि आप पानी में डाल देंगे तो वह डूब जायेगा और यदि आप उसको तैरना सिखा दोगे तो वह तैर कर पार कर देगा कारण तैरना मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान है। इस ज्ञान से किये हुए कर्मों का ईश्वर की न्याय व्यवस्था से उसे अच्छा या बुरा फल मिलता है। मनुष्य भी खाता-पीता, उठता-बैठता, सोता-जागता, आँख खोलना, बन्द करना, बच्चे पैदा करना, ये सभी काम उसके स्वाभाविक काम हैं, इनका फल ईश्वर नहीं देता। अब प्रश्न उठता कि जब ईश्वर ने प्रकृति से जीवों के लिए आदि में सृष्टि तिब्बत के पठार पर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर अनेक नौजवान लड़के-लड़कियों को उत्पन्न किया उस समय उनके माता-पिता, गुरू आदि कोई नहीं थे, जिनसे वे युवा लड़के-लड़कियों को उत्पन्न किया उस समय उनके माता-पिता, गुरू आदि कोई नहीं थे, जिनसे वे युवा लड़के-लड़कियों चलना, फिरना, बोलना आदि सीख सके। उस समय उनका ईश्वर ही माता-पिता तथा गुरू था, इसलिए ईश्वर ने उनको चलना-फिरना, बोलना तथा अपने जीवन को कैसे उन्नत व समृद्धि शान्ति बनाकर जीवन को सुखी व श्रेष्ठ बनाते हुए कैसे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सके जो मनुष्य योनि में आने का जीव का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों द्वारा जिनमें नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, प्रकाशित करके उनके मुख से उच्चारित करवाया। ज्ञान ईश्वर प्रदत्त था और उच्चारित उन ऋषियों ने किया। जिस प्रकार कोई व्यक्ति माईक पर बोलता है तो बोलता व्यक्ति है और आवाज को प्रेषित माईक करता है। ठीक इसी प्रकार जो वेद ज्ञान चार ऋषियों द्वारा उच्चारित किया गया, वह ज्ञान ईश्वर का था और उच्चारित करने वाले ऋषि थे। ऋषियों के मुख से सब से पहले ब्रह्मा ऋषि ने सुना/ब्रह्मा की बुद्धि इतनी प्रखर थी कि उन्होंने चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और फिर उसने बाकी जनता को सुनाया। और फिर बाकी जनता ने ब्रह्मा से सुनकर माता पिता अपने बेटे-पौत्रों को तथा गुरू अपने शिष्यों को सुनाया। इस प्रकार से बाप-बेटे को और गुरू शिष्य को सुनाने की परम्परा शुरू हो गई जो अब तक चलती आ रही है। महाभारत तक तो वेद-ज्ञान का प्रचार व प्रसार बराबर चलता रहा, परन्तु महाभारत के भीषण युद्ध में अधिकतर यौद्धा, विद्वान्, आचार्य आदि या तो मारे गये खा मर गये और महाभारत के बाद मूर्ख, अविद्वान् व स्वार्थी लोगों ने अपने-अपने ढंग से अनेक मत-मतान्तर चला दिये जिससे वेद-ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया। वेद ज्ञान में ईश्वर ने मनुष्य को अपने जीवन में क्या काम करना चाहिए और क्या काम नहीं करना चाहिए सब दिया। वेदों के अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन को उन्नत, समृद्धिशाली व सुखी तो बनाता ही है, साथ ही धर्म, अर्थ, काम को कर्त्तव्य भाव से करते हुए ध्यान, धारणा व समाधि तक पहुँच जाता है और समाधि में आनन्द को अपने जीवन में ही प्राप्त करता है और मृत्यु के बाद मोक्ष की स्थिति में ईश्वर के सानिध्य में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता है। मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब है तब तक मोक्ष में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता रहता है। जीव अधिक अच्छे शुभ काम करने से मनुष्य योनि को प्राप्त करता है और इसी योनि में जीवन भर निष्काम कर्म करते हुए यानि परोपकार के कार्य करता रहता है। वह व्यक्ति मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है।

जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसीलिए मनुष्य योनि को सब से श्रेष्ठ व उत्तम योनि माना है और मोक्ष पाने का द्वार भी मनुष्य योनि ही है। अन्य योनियाँ नहीं।

2. वेद-ज्ञान मनुष्य-मात्र का विधान है-जैसे किसी देश व राष्ट्र का विधान होता है, वह देश व राष्ट्र उसी विधान के अनुसार चलता है तभी वह देश व राष्ट्र में सुख व शान्ति बनी रहती है। देश को चलाने के लिए जैसे विधान जरूरी है वैसे ही सृष्टि को चलाने के लिए वेद-ज्ञान जरूरी है जिसको ईश्वर में सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों के हृदय में प्रकाश करके दिया जिसके अनुसार चलने से मनुष्य सुख व शान्ति को स्वयं भी प्राप्त करता है और अन्यों को भी सुखी बनाता है।

३. बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद-ज्ञान दिया-जिस प्रकार ईश्वर ने मनुष्य की पाँच ज्ञान इन्द्रियों के लिए पाँच तत्त्व दिये जिनके सहारे वह अपना जीवन चलाता है। जैसे आँख के लिए अग्नि ही जिसके प्रकाश से आँखें रूप को देखती है। कानों के लिए आकाश बनाया जिसके सहारे वह शब्द सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई जिससे वह गन्ध को ग्रहण करता है। जिह्वा के लिए पानी बनाया जिससे वह रस का अनुभव करती है और त्वचा के लिए हवा बनाई जिससे वह स्पर्श का अनुभव करती है। यह पाँचों तत्व ईश्वर ने सृष्टि बनाने के साथ ही मनुष्यों के लिए बना दिये थे। इसी प्रकार बुद्धि के लिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद-ज्ञान दे दिया जिसके अनुसार चलने से वह अपने जीवन को उन्नत व सुखी बना सके। यदि ईश्वर वेद-ज्ञान न देता तो बुद्धि अपना कार्य नहीं कर पाती और उसका बनना व्यर्थ हो जाता। वेदों को पढ़कर मनुष्य बुद्धि से चिन्तन व मनन करता है और अपने जीवन को उन्नत व सुखी बनाता है। यह बात भी सत्य है, यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के आरम्भ में वेद-ज्ञान न दिया होता तो मनुष्य पशु ही रह जाता।

४. किसी मशीन को बनाने के बाद वैज्ञानिक सूचि-पत्र बनाता है-एक वैज्ञानिक यदि कोई मशीन बनाता है तो उस मशीन का कैसे प्रयोग किया जाये। खराब होने से कैसे ठीक किया जावे, यह सब बातें वैज्ञानिक एक लघु पत्रिका में लिख कर अपने खरीददार को देता है जिसके आधार पर खरीददार उस मशीन का प्रयोग करता है और कभी खराब हो जाने से उसी लघु पुस्तिका के आधार पर उसे ठीक भी करता है। इसी प्रकार ईश्वर ने भी मनुष्य उत्पत्ति के साथ-साथ वेद-ज्ञान मनुष्यों के लिए दिया जिसको पढ़कर तथा उसके अनुसार चलकर धर्म, अर्थ,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

आप नेता आशुतोष का शर्मनाक ब्लॉग

आम आदमी पार्टी के नेता और पत्रकार आशुतोष द्वारा महात्मा गान्धी, पं. जवाहर लाल नेहरू और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के विषय में लिखा गया ब्लॉग उनकी विकृत मानसिकता और आम आदमी पार्टी के द्वारा की जा रही गन्दी राजनीति का हिस्सा है। अपने स्वार्थ के लिए और अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए यह पार्टी किसी भी हद तक गिर सकती है, इसका अनुमान इनके द्वारा की जा रही बयानबाजी से लगाया जा सकता है। अलग तरह की शुद्ध और भ्रष्टाचार से मुक्त साफ-सुथरी राजनीति का दावा करने वाली आम आदमी पार्टी अपने आप में ही उलझ कर रह गई है। सबसे ईमानदार होने का दावा करने वाली इस पार्टी के कई नेता फर्जी डिग्री, घरेलू हिंसा और महिला उत्पीड़न के आरोपों में फंस चुके है। दिन-प्रतिदिन इनकी राजनीति में कोई नया अध्याय लिखा जाता है। इसके बावजूद इनकी पार्टी के मुखिया स्वभूं अरविन्द केजरीवाल जी हर रोज किसी न किसी बात को लेकर प्रधानमन्त्री के ऊपर ऊंगली उठाते रहते हैं। वास्तव में ये सब बातें इनकी राजनीति का अहम हिस्सा बन गई हैं क्योंकि जिन वायदों के साथ यह पार्टी अस्तित्व में आई थी उन्हें पूर्ण करने में यह पार्टी नाकाम रही है और लोगों का ध्यान उन वायदों से हटाने के लिए वह दूसरों पर दोषारोपण करते रहते हैं।

आम आदमी पार्टी के नेता आशुतोष ने जिस बात को लेकर शर्मनाक ब्लॉग लिखा उसका कारण उनकी पार्टी के मन्त्री श्री संदीप कुमार की सैक्स सी. डी. थी। भले की उन्हें पार्टी से और मन्त्रिमण्डल से निष्काषित कर दिया गया था परन्तु आम आदमी पार्टी की महिलाओं के प्रति किस प्रकार की सोच है उसे इस ब्लॉग ने उजागर कर दिया है। आम आदमी पार्टी के जिस नेता को सैक्स सी.डी. के आरोप में पार्टी से निष्कासित किया गया था उसका बचाव करना आशुतोष के लिए क्यों जरूरी हो गया था। होना तो यह चाहिए था कि इस कार्य की सभी भर्त्सना करते और उचित कार्यवाही करते परन्तु आशुतोष ने ब्लॉग लिखकर संदीप कुमार के कार्य को नैतिकता के आधार पर उचित ठहराया और उसे सही ठहराने के लिए उसकी तुलना राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी, पं. जवाहरलाल नेहरू के साथ कर दी। सन्दीप कुमार ने भी अपनी निर्दोषता सिद्ध करते हुए कहा कि वह दलित है, उसने अपने घर में बाबा साहिब अम्बेदकर की प्रतिमा लगा रखी है इसलिए उसे निशाना बनाया जा रहा है। क्या इस प्रकार के आधारहीन वक्तव्य देकर कोई अपनी निर्दोषता सिद्ध कर सकता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी, पं. जवाहर लाल नेहरू और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ संदीप कुमार की तुलना करके आशुतोष ने उसे हीरो बनाने का प्रयास किया है और संदीप कुमार के सी.डी. काण्ड को सही ठहराने का प्रयास किया है। इतिहास की वास्तविकता कुछ भी हो परन्तु आशुतोष ने इसे मुद्दा बनाकर अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार दी है। गांधी जी जिन्हें पूरा देश राष्ट्रपिता के नाम से पुकारता है जिन्होंने अपने जीवन के एक-एक पल को देश की आजादी के लिए समर्पित किया। अनेकों आन्दोलनों के द्वारा राष्ट्र को जागृत करने का प्रयास किया। जेल गए, अनेक यातनाएं सही, परन्तु फिर भी अपने आजादी के लक्ष्य पर डटे रहे। ऐसे महात्मा के साथ एक भोगी की तुलना करना उनके साथ वास्तविक रूप से अन्याय है। आशुतोष जो स्वयं राजनीति में आने से पहले एक वरिष्ठ पत्रकार रह चुके हैं। दो दशक तक जिसने पत्रकारिता की है ऐसा व्यक्ति इस प्रकार का निन्दनीय ब्लॉग किस प्रकार लिख सकता है। इस सब घटनाक्रम को देखकर लगता है कि यह सब सोची समझी साजिश है। पार्टी के इशारे पर ही आशुतोष ने ब्लॉग लिखा है ताकि गान्धी, नेहरू और वाजपेयी के बहाने कॉंग्रेस, बीजेपी पर निशाना साध सके।

आम आदमी पार्टी की राजनीति से एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि इस पार्टी के नेता अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं। राजनीतिक बयानबाजी इतनी घटिया और गिरी हुई हो सकती है यह आम आदमी पार्टी के नेताओं से पता चलता है। हर किसी की आलोचना करना और अपने आपको साफ- सुथरा साबित करना इनकी राजनीति का अहम हिस्सा है। जिन महापुरूषों को इस पार्टी के नेता ने निशाना बनाया है, उनके इस देश के निर्माण में दिए गए योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। गान्धी, नेहरू और अटल की तुलना में सन्दीप कुमार को खड़ा करना आशुतोष की मूर्खता का प्रमाण है। आम आदमी पार्टी की नैतिकता तो इसी बात में थी कि जिस प्रकार उन्होंने संदीप कुमार को पार्टी से निष्कासित किया था उसी प्रकार उसके ऊपर कड़ी से कड़ी कार्यवाही करके, सजा दिला करके एक अच्छा संदेश देते कि अनुशासनहीनता करने वालों को किसी भी कीमत पर बर्दाशत नहीं किया जाएगा। आशुतोष के लिखे ब्लॉग से यही लगता है कि आम आदमी पार्टी संदीप कुमार को पार्टी से नहीं निकालना चाहती थी, पार्टी संदीप कुमार के कृत्यों को सही मानती थी और केवल जनता को भ्रमित करने तथा अपनी छवि को बचाने के लिए उन्होंने उसे पार्टी से निकाला था।

वास्तव में जिस अन्ना हजारे के आन्दोलन से इस आम आदमी पार्टी का उदय हुआ था और जिन मुद्दों को लेकर सह पार्टी अस्तित्व में आई थी, उस पर पुनः इस पार्टी को चिन्तन और मन्थन की आवश्यकता है। जो आदर्श और मापदण्ड इस पार्टी ने बनाए थे, उन मापदण्डों पर उसी पार्टी के नेता खरे नहीं उतर रहे है। जिस दोषारोपण की राजनीति को इस पार्टी ने अपनी दिनचर्या का अहम हिस्सा बना लिया है, उससे थोड़ा ऊपर उठकर इन्हें कार्य करने की आवश्यकता है। एक व्यवस्था के अधीन रहकर कार्य करने की आवश्यकता है। अगर आम आदमी पार्टी ऐसा नहीं करती है तो इस पार्टी का उदय से पहले ही अस्त हो जाएगा और इसके जिम्मेवार दूसरी पार्टी के नेता नहीं अपितु इनकी अपनी ही पार्टी के आशुतोष जैसे नेता होंगे। अपनी ऊर्जा को व्यर्थ के कार्यों व विवादों में गंवाने के बजाए सही दिशा में प्रयोग करने की आवश्यकता है। जिस पारदर्शिता और शुचिता का दावा यह पार्टी करती है, उसके ऊपर पहले इन्हें स्वयं चलना होगा।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

यज्ञीय पञ्चाङ्ग हविर्द्रव्य

ले. -पं० वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E कैलाश नगर, फाजिलका-152123 पंजाब

(गतांक से आगे)

हविर्द्रव्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

(क) समिधा। (ख) हवनीय पदार्थ।

(क) समिधा-यज्ञ में समिधा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि यह कहा जाय कि यज्ञ का आधार समिधा है तो अत्युक्ति न होगी। क्योंकि हवनीय पदार्थों को भस्मसात् करने का साधन समिधा है अर्थात् समिधा पूर्णरूप से जल कर शाकल्य को भी शाकल्येन भस्म कर दे। अतः समिधा की गणना हविर्द्रव्यों में न होने पर भी इसकी महत्ता की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(समिधा का विस्तृत विवेचन ''यज्ञ समिधा'' शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।)

(ख) हवनीय पदार्थ-द्रव्य पदार्थों का वर्णन विभिन्न ग्रन्थों में विस्तार से किया गया है-

1. तैलं दधि पय सोमो यवाम्रोदनं घृतम्।

तण्डुलाः फलमापश्य दश द्रव्याण्युक्तान्यतः।। स्मातोल्लास तैल, दही, दूध, सोमलता (रस), यवागू, भात, घी, कच्चे चावल, फल और जल ये दश द्रव्य हैं।

2. द्रव्य से अभिप्राय घृत, चरु, हव्य अर्थात् हवन सामग्री है। स्वास्थ्य पोषाहारयुक्त द्रव्यों का पुरोडाश, चरु, मोदक, मोहनभोग, क्षीरपाक, द्विदलों की पिष्टि से निर्मित पक्वापक्वान्न, सक्तु, खीर, खिचड़ी आदि विशेष हवनीय पदार्थ हैं। जो विशिष्ट यज्ञों हेतु तैयार किए जाते हैं।

3. (क) प्रकृतिस्थ उत्पत् तैल प्रधान हवनीय द्रव्य-बादाम, नारियल, लौंजे, अक्षोह (अखरोट) काजू, जर्तिल (जैतून), तिल आदि।

(ख) मिष्ट प्रधान शुष्कफल (i) खजूर, छुहारा, किशमिश, मुनक्का आदि। (ii) शक्कर, गुड़, शहद आदि।

4. तदेव घुनले हुत्वा प्राप्नोति बहुसाधनम्।

अनादि हवनान्नित्यंमन्नाघं च भवेत् सदा।।

अन्नों का नित्य हवन करने से पृथिवी पर पर्याप्त मात्र में अन्न पैदा होता है।

5. रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने। हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्र गोमयं द्विजः।।

रक्तचन्दन को मिला कर अग्नि में हजार बार आहुति देने से पशुओं से घी, दूध और गोबर भली प्रकार प्राप्त होता है।

यज्ञीय द्रव्यों की वैकल्पिक व्यवस्था

घृतार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभाले तु महिषम्। आजं वा तदभावेतु साक्षात् तैलमपीष्यते।। तैलभावे ग्रहीतव्य तैलं जर्तिलम्भवम्। तदभावेऽतस स्नेहः कौसुभः सर्पयोद्भव।। वृक्षस्नेहीऽश्वा ग्राह्यः पूर्ण-लाभे परः परः।

तदभावे यवग्रीहिश्यामा-कन्यत-मोद्भवः।। मण्डन यज्ञ में गाय का घी सर्वोत्तम है। वह न मिले तो भैंस का लें। उसके अभाव में बकरी का, वह भी न हो तो शुद्ध तेल जर्तिल (जैतून), ती सी (अलसी), कौसम्भ कसूम= कुसुम या सरसों का तेल लें। वह भी प्राप्त न हो तो गोंद या जौ, चावल, सावां आदि की चिकनाई से काम चलाके।

यथोक्तवस्त्वसम्पतौ ग्राह्यं तदनुकरियेत्।

यवानामिव गोधूमः व्रीहीणामिव शालयः।।

आज्यं द्रव्यमनादेशे जुहोतिषु विधीयते।

दध्यलाभयेयः कार्य मध्व-लाभे तथा गुडः।।

घृतं प्रतिनिधि कुर्यान्पयो वा दधि वा बुधः।

आज्यहोमेषु सर्वेषु गव्यमेव घृतं भवेत्।।

होम आदि कार्य में विहित वस्तु प्राप्त न होने पर उसी के तुल्य अन्य पदार्थ से काम चलावे। जैसे जौ के न मिलने पर गेहूँ, चावल न मिलने पर शालि के चावल, दही के अभाव में दूध, मधु के अभाव में गुड़, घी के अभाव में दूध या दही लेवे।

हविष्यान्नं तिला भाषा नीवारा व्रीहयो यवाः। इक्षवः शालयो मुद्गा पयो दधिघृतं मधु।।

हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु वीहयः स्मृताः। व्रीहीणामप्यलाभे तु दध्ना वा पयसापि वा।।

यथोक्तवस्त्वसम्पत्तौ ग्राह्यं तद्-नुकल्पतः। यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालयः।।

तिल, उड़द, नीवार (वन्य चावल), भदोह धान, जौ, ईख, बासमती, चावल, मूंग, दूध, दही, घी और शहद ये हवि हैं।

हवि पदार्थों में जौ मुख्य हैं, उसके बाद धान। यदि धान मिले तो दूध या दही से काम चलावे।

कही हुई वस्तु न मिले तो उसके स्थान पर अनुकल्प अर्थात् उसके समान गुण वाली वस्तु ले लेनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द द्वारा निदिष्ट हव्य पदार्थ महर्षि दयानन्द ने प्रथम बार हव्य पदार्थों का अत्यन्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया और उन्हें चार भागों में विभाजित किया-

(क) सुगन्धित-केशर, अगर, तगर, कपूर, गुग्गल, चन्दन, लौंग, इलामची आदि।

(ख) पुष्टिकारक-घृत, दूध, फल, अन्न-चावल, जौ, मूंग, उड़द, तिल, मखाने आदि।

शुष्कफल-बादाम, काजू, अखरोट, जर्तिल (जैतून), नारियल, लौंजे आदि।

(ग) मिष्ट-शहद, शक्कर, दाख, छुहारा, किशमिश, खर्जूर, गुड़ आदि।

(घ) रोगनाशक-गिलोय, ब्राह्मी, शंकपुष्पी, मुलहठी, सोंठ, रक्त-चन्दन, तुलसी आदि।

हवन सामग्री में इन चारों प्रकार के पदार्थों का सन्तुलन बना रहे, इसीलिए महर्षि ने इनका चार भागों में विभाजन किया है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार सभी प्रकार के पदार्थ सम्मिलित करने चाहिए।

आजकल प्रायः बनी बनायी हवन सामग्री का उपयोग किया जाता है। अतः उसमें अग्रलिखित वस्तुएं बाजार से लेकर अवश्य मिलाएं-

गुग्गल, कपूर, लौंग, इलायची, चन्दनचूरा, चावल, जौ, मखाने, शक्कर/चीनी/गुड़, घी, छुहारा, बादाम, अखरोट आदि। मात्रा इसलिए नहीं लिखी गयी, जिससे यजमान अपनी श्रद्धा, सामर्थ्य और आवश्यकतानुसार पदार्थ मिला सकें। इसमें न्यूनाधिक्य भी हो सकता है। परन्तु चारों प्रकार के पदार्थों का प्रयोग करना ही प्रशस्य एवं समीचीन है और वैज्ञानिक भी। (क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

कुछ उपनिषदों से (प्रश्नोपनिषद)

-ले० सुशील वर्मा गली मास्टर मूल चंद वर्मा फाजिलका-152123 (पंजाब)

कई बार विचार आता है कि सृष्टि का धारण एवं प्रकाशन किस शक्ति से है ? इसके उत्तर में प्रश्नोपनिषद् में एक कथा है कि ब्रह्माण्ड के जड़ जगत के विषय में आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी सभी कह रहे थे कि हमने ही सृष्टि को धारण किया हुआ है। इसी प्रकार पिण्ड के चेतन जगत में वाणी मन, चक्षु तथा श्रोत्र आदि कह उठे कि हम ही है इस पिण्ड को धारण करने वाले। प्रत्युतर में प्राण ने कहा मैं अपने को पाँच भागों में विभक्त करके जैसे एक छप्पर को एक बल्ली धारण कर रही होती है वैसे ही मैं इसे धारण कर रहा हूँ। परन्तु सभी ने इस असहमति जताई। प्राण भी अपना अभिमान न रोक सका और उत्क्रमण करके निकलने ही लगा कि दूसरे सभी निकलते नज़र आने लगे और प्राण के ठहरने से ही सब ठहरने लगे।

प्राण ही अग्नि रूप में ताप दे रहा है, वही सूर्य रूप में प्रकाश दे रहा है। वही बादल में जल बरसा रहा है। प्राण ही वायु रूप में जीवन दे रहा है। अतः संसार में जो मरण धर्मा सत् असत् है जो अमरण धर्मा अमृत है-सब प्राण ही है। संसार को थामने वाली भौतिक शक्ति क्षत्र है, आत्मिक शक्ति ब्रह्म है ये दोनों भी प्राण शक्ति पर ही आश्रित है।

पिप्पलाद ऋषि से फिर प्रश्न किया गया कि यह प्राण जो सब उत्पन्न पदार्थों को धारण करता है वह

1. स्वयं कहाँ से उत्पन्न होता है?

2. यह शरीर में किस प्रकार प्रवेश करता है ?

3. यह अपने भिन्न-भिन्न विभाग करके शरीर में किस प्रकार स्थित है ?

4. प्राण शरीर में से किस प्रकार निकलता है ?

5. ब्राह्य संसार को किस प्रकार यह प्राण धारण करता है ?

6. आत्मा को यह प्राण किस प्रकार धारण करता है।

ऋषि ने उत्तर दिया और प्रश्नकर्ता की जिज्ञासा को शांत किया।

1. प्राण की उत्पति आत्मा से होती है। जब जीवात्मा गर्भ में आता है तब उसके साथ प्राण भी आ जाता है।

जिस प्रकार पुरूष के साथ छाया लगी है इसी प्रकार आत्मा के साथ प्राण लगा है। जीवात्मा अकेले गर्भ में नहीं आता। प्राण भी उसके साथ ही प्रवेश करता है।

2. मन के किए से वह प्राण शरीर में आता है। मन की वासनाएँ ही रस्सी बनकर आत्मा को शरीर में खींच लेती है। आत्मा शरीर में आया नहीं कि प्राण चलने लगे। मनुष्य ने पूर्वजन्मों में जो शुभ अशुभ कर्म किए थे जिसका फल उसको पूर्व जन्मों में नहीं मिला था उनका संस्कार मन में रहता है। उन कर्मों का फल भुगताने हेतु मन सहचरित जीवात्मा के साथ प्राण भी शिशु देह में प्रवेश करता है।

3. जिस प्रकार सम्राट अपने कर्मचारियों को विभिन्न-विभिन्न विभाग नियुक्त करता है उसी प्रकार प्राण भी अन्य पाणों को पृथक-पृथक अपने कार्यों में नियुक्त करता है।

चक्षु श्रोत्र-मुख, नारिका में स्वयं प्राण गुदा तथा उपस्थ भाग में अपान, शरीर के मध्य भाग में समान। समान के द्वारा ही शरीर में पड़ा हुआ अन्न सम करके अर्थात् एक रस बनाकर सब जगह पहुँचाता है। जिससे शरीर में सात ज्योतियां प्रकाशित हो उठती है। दो आंखे, दो नाक, दो कान और एक मुख. इन्हें समान के द्वारा ही रस की प्राप्ति होती है।

आत्मा का निवास हृदय में है। हृदय के साथ मुख्य रूप से 101 नाड़ियां है। इनमें से एक-एक से सौ सौ शाखाएँ निकलती है। उन शाखाओं से भी 72000 प्रातिशाखाएँ निकलती है। इस प्रकार हृदय से लेकर पूरा रक्त संचारिणी संस्थान में व्यान विचरता है। हृदय से एक नाड़ी मस्तिष्क को जाती है। उसमें उदान ऊपर या नीचे की तरफ जीवन रहता है। यह तो हुआ पिण्ड में प्राणापान आदि का वर्णन। ब्रह्माण्ड में स्थिति इस प्रकार वर्णित है।

ब्राह्य जगत में प्राण ही आदित्य रूप होकर उदय होता है। आदित्य की प्राण शक्ति ही चक्षु की प्राण शक्ति को अनुग्रहीत करती है। अत चक्षु इस पिण्ड का सूर्य है। सूर्य इस ब्रह्माण्ड का चक्षु है। प्राण ऊपर है अपान नीचे। सूर्य के साथ प्राण का तथा पृथ्वी के साथ अपान का सम्बन्ध है।

पृथ्वी का देवता कौन है जो इसे नीचे की ओर खींचता है ? वही तो इसका देवता है उसी से पृथ्वी टिकी हुई है वर्ना तो सूर्य के खिंचाव से उसी से जा ठकराती। अतः अपान ही गुरूत्व रूप होकर स्थिति का कारण है। सूर्य और पृथ्वी के बीच जो अन्तर है इन दोनों के बीच जो आकाश वही समान है। वायु व्यान है। शरीर में जैसे उदान है वैसे ही ब्राह्य जगत में तेज़।

4. जिस प्रकार उदान द्वारा आत्मा शरीर से निकलता है उसी प्रकार जब तक शरीर में तेज़ रहता है तब तक आत्मा उदान की सहायता से शरीर में ही रहता है। जब शरीर का तेज़ शान्त हो जाता है तब इन्द्रियाँ बाहर फिरना छोड़कर मन में जा टिकती है।

5. अतः शरीर का उदान ब्राह्य जगत के तेज़ का प्रतिनिधि है। जैसे ब्राह्य जगत में जब तेज़ अस्त होने लगता है तब इन्द्रिया मन में लीन हो जाती है और सूक्ष्म मन सहित जीवात्मा पुर्नजन्म को प्राप्त होता है। तब सारी सृष्टि मानो मर कर नए दिन की तैयारी करने लगती है। वैसे ही शरीर का तेज़ जब शांत होने लगता है तब उदान की सहायता से आत्मा पुण्य कर्मों के कारण पुण्य लोक में पाप कर्मों के कारण पाप लोक में, उभ्य कर्मों के कारण मनुष्य लोक में जाता है।

6. मृत्यु के समय जिस प्रकार का चित्त होता है उसी प्रकार का चित प्राण के पास पहुंचता है प्राण अपने तेज़ के साथ आत्मा के पास पहुंच जाता है। अतः प्राण ही तेज़ चित और आत्मा के अपने संकल्पों के अनुसार के लोक में ले जाता है।

तेज चित एवं आत्मा क्या है, इन तीनों का प्राण के साथ क्या सम्बन्ध है ?

वास्तव में प्राण की दो शक्तियां है। 1. शारीरिक 2. मानसिक

प्राण की शारीरिक शक्ति उसका तेज़ है। प्राण के तेज से ही शरीर किया करता है। इसी प्रकार प्राण की मानसिक शांति उसका चित्त है। इस चित्त के द्वारा ही संकल्प विकल्प होता है। मृत्यु के समय प्राण अपने तेज़ और चित्त के साथ लेकर चल पड़ता है। चलते समय आत्मा भी साथ हो लेती है। क्योंकि आत्मा और प्राण ने तो साथ ही रहना है। आत्मा शरीर में से जिस मार्ग से निकलती है उसे उपनिष्तकार ने उदान मार्ग कहा है। यह वह मार्ग है जो हृदय की उस नाड़ी से चलता है जो मस्तिष्क में जाकर खुलती है।

इस प्रकार ऋषि ने यह जिज्ञासा शान्त की कि प्राण की उत्पत्ति कहां से होती है। भिन्न-भिन्न पांच स्थान कौन है से है जहां यह अपने आप को विभाजित करता है। किस प्रकार संसार में प्राण सब जगह व्याप रहा है। यह शरीर एवं ब्राह्य जगत में अर्थात् पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड में किस प्रकार तादात्म्य स्थापित किए हुए है। अर्थात् प्राण ही जीवन का आधार है शरीर मात्र का ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड का भी। उसी ने ही सृष्टि को धारण किया हुआ है एवं प्रकाशन शक्ति भी उसी से ही है।

इसी प्रकार का वर्णन बृहदारण्यक उपनिषद् में है। वहाँ याज्ञवल्कय कहते हैं कि शरीर एवं हृदय प्राण में प्रतिष्ठित है। प्राण अपान में, अपान व्यान में, व्यान उदान में है, उदान समान में प्रतिष्ठित है।

www.thearyasamaj.org

महान बनो

-ले० नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सै. 20 पंचकूला

मनुष्य अपने जीवन में महान कैसे बन सकता है। इस यक्ष प्रश्न का उत्तर हमें वेद ज्ञान से मिलता है। ऋग्वेद का मंत्र "**अयमुष्य सुमहों अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः।**" अर्थात् सुमहान वही है जो 1. होता 2. मन्द्रः 3. मनुषः 4. यह्वः: 5. अग्निः इस गुणों से परिपूर्ण है। इन गुणों की चर्चा से पूर्व हमें महानता के सामान्य अर्थ और कसौटी को समझना होगा।

सामान्य तौर पर बड़े होने को ही महान होना समझ लिया जाता है। अंग्रेजी में दोनों को समानार्थक माना गया है और ग्रेट का अर्थ बड़े और महान दोनों से किया जाता है। भाषाओं की जननी और विश्व की सबसे प्राचीन समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा संस्कृत और उसके निकटतम उसी देवनागरी लिपि से बनी हमारी मातृभाषा हिन्दी इस अंग्रेजी से कहीं अधिक व्यापक समृद्ध होने के कारण इस बड़े और महान होने के अन्तर को स्पष्ट कर देती है। वेद की दृष्टि में तो ना कोई बड़ा है ना कोई छोटा। धन ऐश्वर्य से बड़ा होने पर कोई महान नहीं हो सकता। महानता की कसौटी पर समय और समाज मनुष्य को कसता है। कोई भी व्यक्ति यदि स्वयं को खुद ही स्वयंभु बनकर महान घोषित कर देता है तो वह महान नहीं कहलाता अपितु वह तो आत्म मुग्धता से ग्रस्त एक अहंकारी मात्र है और अहंकार या अभिमान एक ऐसा अवगुण है जो किसी गुण से पैदा होता है और फिर सबसे पहले उसी गुण को खा जाता है। जैसे ज्ञान का अभिमान ही सबसे बड़ी अज्ञानता है। अर्थात् वही मनुष्य महान है जिसे समय और समाज महान कहे ना कि वह जो खुद को महान घोषित कर दे।

आइये अब महानता के पांचों लक्षणों पर चर्चा करते हैं। प्रथम लक्षण है होता जिसका अर्थ है वह याज्ञिक जो अग्निष्ठ होकर ज्योति वा प्रकाश का प्रादुर्भाव करता है। होता एक कर्म कुशल कर्मयोगी होता है और प्रत्येक संस्था में होता के होने से ही सब कुछ होता है और नहीं होने से कुछ नहीं होता। यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठतम कर्म करते हुए समय की आवश्यकताओं के अनुसार दिव्यताओं का सृजन सत्कार संगतिकरण करता हुआ जब सर्वस्व समर्पित कर देता है तब वह होता के रूप में जाना जाता है। होता केवल आहवाता यानि आह्वान करने वाला ही नहीं अपितु वह परमपिता परमेश्वर को अंगीकार करने वाला आदाता और समाज, राष्ट्र, विश्व के हित के लिए सर्वस्व दान करने वाला दाता भी होता है।

सुमहानता दूसरा लक्षण मन्द्रः अर्थात् आनन्दवृति वाला होना। आनन्द और सुख में अन्तर है आनन्द आत्मा का भोजन है जबकि सुख मनुष्य की मनः स्थिति पर निर्भर करता है। स्थिति अनुकूल होने पर सुख प्रतिकूल होने पर दुःख होता है। जबकि आनन्द में मनुष्य का आत्मा आनन्द स्वरूप परमपिता परमेश्वर के आनन्द में निमग्न होकर नर्तन करने लगता है। इसे ही उपासना भी कहते हैं। आनन्द की स्थिति में साधक साधना करते हुए साध्य देव ईश्वर को समर्पित होकर एक रूप हो जाता है। सामान्य अर्थ में जो मनुष्य अपने को सौंपे गए नियत कार्य में पूरी रूचि लेकर उसमें निमग्न होकर जय पराजय के भाव से मुक्त स्थितप्रज्ञ होकर प्रसन्नतापूर्वक कुशलता से उस कार्य को करता है वही आनन्द वृति वाला होता है।

महानता का तीसरा लक्षण है मनुषः अर्थात् मनुष्यता। वेद भगवान ने मनुर्भव कहकर हमें मनुष्य बनने का आदेश दिया। इससे स्पष्ट है कि मानव योनि में जन्म लेने के उपरांत भी मनुष्योचित गुणों को धारण करके ही हम मनुष्य बन सकते हैं। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने मनुष्य को परिभाषित करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिया "मनुष्य वह जो मननशील, विचारवान हो, सभी से स्वआत्मवत यथायोग्य व्यवहार करता हुआ निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण और दुष्टों को दंड देकर परोपकार के कार्य किया करे।" अब हमें आत्मविवेचन करते हुए खुद को इस कसौटी पर कसना है कि क्या हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं या फिर मनुष्य रूपेण मृगाश्चरति हम मनुष्य के रूप में पशु बनकर फिर रहे हैं। मनुष्यता हम मनुष्यों का धर्म है यदि हम अपने धर्म मनुष्यता की रक्षा करेंगे तो निश्चित रूप से रक्षित धर्म हमारी रक्षा करेगा और यदि हम अपने धर्म मनुष्यता को मार देंगे तो यही मरा हुआ हमारा धर्म हमें मार देगा। यदि हम महान बनना चाहते हैं तो पहले हमें मनुष्य बनना होगा।

सुमहानता का चौथा लक्षण है **यह्वः** अर्थात् पवित्र विचार और विशाल हृदयता लिए महानता। इसीलिए ब्रह्मयज्ञ में साधक प्रार्थना करता है "ओं भूः पुनातु शिरसि" और "ओं महः पुनातु हृदये"। वस्तुतः महान वही है जिसके विचार महान हों दिल महान हो और कर्म महान हों।

महानता का पांचवां लक्षण है **अग्निः** अर्थात् अग्निस्वरूप परमेश्वर की ज्योति से ज्योतिर्मय अन्तरात्मा। महान वही है जिसके अन्दर आग है प्रकाश है ताप है उत्साह है और जो स्वयं रोशन है वही दूसरों को रोशनी दे सकता है। मनुष्य का आत्मा सत्य का आग्रही है और सर्वान्तर्यामी परमेश्वर सत्यस्वरूप सर्वज्ञ हमारी आत्मा में विराजमान हमारे सच्चे मित्र होकर सदैव हमें सत्य धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। महान बनने के लिए आवश्यक है। हम अग्निस्वरूप अन्तर्यामी ईश्वर से स्वयं प्रकाशित हों और आत्मा में उद्बुध अग्नि में यश अपयश की चिन्ता किए बिना आनन्दमय होकर सद्कर्मों की आहुति देते हुए सच्चे होता बनें तभी हम महान बन सकते हैं।

आर्य समाज कबीर नगर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मंदिर कबीर नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव 28 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2016 तक बड़े उत्साहपूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी के वेदों पर प्रवचन होंगे और भजनमंडली सतीश सुमन सुभाष राही के मधुर भजन होंगे। आप सभी से अनुरोध है कि सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं तथा धर्मलाभ प्राप्त करें। **मंत्री आर्य समाज कबीर नगर जालन्धर**

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन1 अक्तूबर से 3 अक्तूबर 2016 तक किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि ऐसी आत्मीयता बनाए रखते हुए कृपया इस महोत्सव में पधार कर महोत्सव की शोभाश्री में अभिवृद्धि करने की अनुकम्पा करें। **अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष न्यास उदयपुर**

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज हबीबगंज अमरपुरा लुधियाना का वार्षिक उत्सव दिनांक 29 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2016 तक बड़े उत्साहपर्वूक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य राजु जी वैज्ञानिक दिल्ली से पधार रहे हैं। आप सभी से अनुरोध है कि सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं तथा धर्मलाभ प्राप्त करें। **मन्त्री आर्य समाज हबीबगंज**

www.thearyasamaj.org

श्रीमती मीरा जी सरीन का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा भिन्न-भिन्न आर्य संस्थाओं एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी डा० विजय जी सरीन की धर्मपत्नी श्रीमती मीरा जी सरीन का 31 सितम्बर को प्रातः देहान्त हो गया। वह पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रही थी। इस दुःखद समाचार को सुन कर सभी आर्यों व नगर निवासियों में शोक की लहर छा गई। उसी दिन सांय 5 बजे पूर्व वैदिक रीति एवं मन्त्रोंचारण के साथ उनका अतिंम संस्कार किया गया सभी गणमान्य व्यक्ति एवं माताएं-बहिने तथा सभा के सभी अधिकारीगणों ने उनके अन्तिम दर्शन कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। श्रीमती मीरा सरीन सौम्य स्वभाव, मृदु भाषी, धर्म परायण तथा एक निष्ठावान महिला था। वह अपने पति डा० विजय सरीन जी के साथ आर्य समाज के सभी कार्यों में बड़ी श्रद्धा से सम्मिलित होती थी। टंकारा में कई बार ऋषि बोधोत्सव पर अपनी महिला बहिनों के साथ उपस्थित होती रही। प्रभु ने उन्हें बहुत सुन्दर स्वर दिया हुआ था जिसके माध्यम से वह हर सत्संग में मधुर भजनों को सुना कर सभी को अपना बना लेती थी। जवाहर नगर आर्य समाज जहां पर डा० विजय जी सरीन जी प्रधान है के हर कार्यक्रमों को सफल बनाने में वह अपने पति का पूर्ण सहयोग करती रही। इसी प्रकार आर्य समाज पार्क-लेन को आगे बढ़ाने में उनका पूर्ण सहयोग रहा है। उनके निधन से आर्य समाज में एक अभाव सा प्रतीत हो रहा है। शनिवार 3 सितंबर को दिवगत आत्मा की शांति तथा सद्गति के लिए एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। बहुत विशाल संख्या में शहर के गणमान्य व्यक्तियों एवं भिन्न-भिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने उस सभा में सम्मिलित होकर परिवार से संवेदना प्रकट की। सभा में वेद मन्त्रोंचारण के साथ-साथ भजनों के माध्यम से तथा पुरोहित सभा पंजाब के आचार्यों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री देवेन्द्र जी शर्मा तथा जिला आर्य सभा की ओर से श्रीमती राजेश जी शर्मा ने सभी की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किए सभी संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य समाजों से शोक संदेश प्राप्त हुए।

-श्रवण बत्रा

पृष्ठ 2 का शेष-ईश्वर ने वेद.....

काम को धर्मानुसार व कर्त्तव्य भाव से करते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है जो मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है। जिसको पाने के लिए जीव मनुष्य योनि में आता है।

यहाँ समझने की बात यह है कि मनुष्य की देह से जब आत्मा या जीव जाता है तो उसकी तीन गतियाँ होती है। यदि उस मनुष्य ने अपने जीवन में आधे से अधिक अच्छे व शुभ कर्म किये हैं तो उसको एक साधारण मनुष्य जीवन मिलता है। आधे से जितने अधिक उसे व शुभकर्म करेगा तो उतनी ही मनुष्य योनिम अच्छी सुखदायक परिवार में उतना होगा यानि एक गरीब परिवार में न होकर किसी साहुकार, राजा या कोई बड़े मन्त्री के घर पैदा होगा। और जीवन में बुरे काम अधिक किये है तो औसतन के हिसाब से पशु-पक्षियों कीट-पतंग की योनि में जन्म लेगा और जिस व्यक्ति ने जीवन भर अच्छे सत्कर्म या परोपकारी काम किये है, उसे मरने के बाद मोक्ष प्राप्त होगा। बस यह तीन गति ही मनुष्य चोला छोड़ने के बाद होती है। यह सब बातें मनुष्य ने अपनी कल्पना युक्ति से बनाया है, बाकी सही बात या विधि तो ईश्वर को ही ज्ञात है जो जीव के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार उसको अगली योनि देता है।

स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना में आजादी दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। स्त्री आर्य समाज की बहनों ने देशभक्ति के गीतों से वातावरण को सुन्दर बना दिया। प्रधाना इन्द्रा शर्मा जी ने जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती हैं बसेरा वो भारत देश है मेरा, शशि आहुजा जी ने आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं-- आदि सुन्दर-सुन्दर भजन सुनाएं। आर्य समाज के पुरोहित श्री अरविन्द शास्त्री जी ने देश की स्थिति पर सुन्दरता से प्रकाश ड़ाला। स्त्री आर्य समाज वेद प्रचार के कार्यों में हमेशा आगे रहती है। स्त्री आर्य समाज की सुयोग्य सदस्य श्रीमती स्वर्ण बत्तरा हमारे बीच में नहीं रही। उन्हें भी भावभीनी श्रद्धाजंलि सभी बहनों ने दी। सिविल लाईन ग्रीनपार्क का सत्संग 14 अगस्त को किचलू नगर में हुआ। एक सत्संग किचलू नगर में 9 अक्तूबर को है जिसमें स. सुरेन्द्र सिंह गुलशन भाग लेंगे।

जनक रानी आर्य मन्त्री स्त्री आर्य समाज

ध्यान योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर 22-ए चण्डीगढ़ में विगत 4 जुलाई 2016 से 10 जुलाई 2016 तक ध्यान योग शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का आयोजन परमपूज्य श्रद्धेय स्वामी केवलानन्द सरस्वती आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार के सानिध्य में बहुत उत्तम रीति से क्रियात्मक रूप से सम्पन्न हुआ।

इसके अलावा आर्य समाज का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 05-9-2016 सोमवार से दिनांक 11-09-2016 रविवार तक मनाया गया। मोहाली की सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं की सामूहिक उपस्थिति में श्रावणी उपाकर्म सामवेद पारायण यज्ञ का भसव्य समारोहपूर्वक आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुविख्यात मूर्धन्य सन्यासी आठ गुरूकुलों के संचालक और आर्ष पाठ विधि के संवाहक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती गुरूकुल गौतमनगर दिल्ली, वेद पारायण यज्ञों के प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री एवं भजनोपदेशक श्री भानु प्रकाश बरेली ने भाग लिया। इस पावन अवसर पर सभी आर्यजनों ने भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया।

सोमदत्त शास्त्री प्रधान आर्य समाज

स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 15 अगस्त का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर श्री राजेन्द्र भगत सेवानिवृत्त राजदूत पधारे तथा उनके करकमलों द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। इसके पश्चात स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसकी खूब प्रशंसा की गई। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्यों, स्त्री आर्य समाज एवं छावनी के गणमान्य सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के पश्चात सभी को जलपान कराया गया।

दिनांक 25-8-2016 को आर्य समाज जालन्धर छावनी में श्रीकृष्ण जनमाष्टमी का पर्व बड़ी श्रद्धा और प्रेम से मनाया गया जिसमें आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर पं. बुद्धदेव जी ने भजन एवं प्रवचन द्वारा श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश ड़ाला। इस कार्यक्रम के पश्चात सबको मिठाई वितरित की गई।

जवाहर लाल महाजन मन्त्री आर्य समाज

वार्षिक उत्सव

वैदिक साधनाश्रम गुरदासपुर का वार्षिक उत्सव 19 सितम्बर से 25 सितम्बर 2016 तक बड़े उत्साहपूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी के वेदों पर प्रवचन होंगे और भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार जी वेदालंकार के मधुर भजन होंगे। आप सभी से अनुरोध है कि सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं तथा धर्मलाभ प्राप्त करें।

रामनिवास शास्त्री अध्यक्ष

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का वेद प्रचार पखवाड़ा सम्पन्न

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में 28 अगस्त से 11 सितम्बर 2016 तक वेद प्रचार पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान श्री राजू वैज्ञानिक जी के प्रवचन हुये और श्रीमती रश्मि घई के मधुर भजन हुये। चित्र एक में श्रीमती रश्मि घई जी, श्री राजू वैज्ञानिक जी, आर्य समाज के पुरोहित श्री सत्य प्रकाश जी। चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री दविन्द्र नाथ जी शर्मा उप प्रधान और श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट प्रसिद्ध विद्वान श्री राजू वैज्ञानिक का प्रवचन सुनते हुये। चित्र तीन में आर्य समाज माडल टाऊन की बहिनें प्रवचन सुनती हुईं और चित्र चार में आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी एवं स्त्री आर्य समाज की प्रधान श्रीमती सुशीला भगत जी समर्पण नामक पुस्तक का विमोचन करते हुये।

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में तथा परमात्मा की पवित्र वाणी वेद का ज्ञान घर-घर तक पहुंचाने के लिए प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार पखवाड़े का आयोजन किया गया। 28 अगस्त 2016 रविवार से लेकर 11 सितम्बर 2016 रविवार तक भिन्न-भिन्न परिवारों की तरफ से सत्संग का आयोजन आर्य समाज मन्दिर में किया गया। प्रतिदिन प्रात: 6:30 से 8:00 बजे तक तथा सांय 5:00 से 7:00 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होते रहे। आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य राजू जी वैज्ञानिक अपने प्रवचनों के द्वारा ज्ञान की अमृत वर्षा लगातार पन्द्रह दिन करते रहे। सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन एवं श्रीमती रश्मि घई जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा वातावरण को भक्तिमय बना दिया। प्रथम सत्संग 28 अगस्त को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के परिवार की तरफ से स्व. माता राजकुमारी शर्मा जी की याद में करवाया गया। यह परिवार हमेशा परोपकार के कार्यों में अग्रणी रहता है। 29 अगस्त को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी के परिवार की तरफ से सत्संग करवाया गया। 30 अगस्त दयानन्द मॉडल स्कूल के प्रिंसिपल श्री विनोद कुमार जी ने बच्चों को वेद का ज्ञान प्रदान करने के लिए दयानन्द मॉडल स्कूल में सत्संग कराया। 31 अगस्त को डॉ. श्री रवि महेन्द्रू जी ने अपने परिवार की तरफ से सत्संग का आयोजन किया।

1 सितम्बर को श्रीमती विजय चोपड़ा जी के परिवार की ओर से, 2 सितम्बर को श्रीमती सरिता एवं श्री नरेन्द्र विज के परिवार, 3 सितम्बर को कुन्द्रा परिवार की ओर से, 4 सितम्बर को डॉ. बी. एस. चोपड़ा एवं डॉ. एस. के. शर्मा के परिवार की ओर से, 5 सितम्बर को श्रीमती रमा एवं श्री केवल नागपाल के परिवार की ओर से, 6 सितम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी के परिवार की ओर से सत्संग का आयोजन किया गया। 7 सितम्बर को आर्य समाज मॉडल टाऊन के प्रधान श्री अरविन्द घई जी ने अपने परिवार की तरफ से सत्संग एवं यज्ञ का आयोजन किया। 8 सितम्बर को श्री जे. सी. मल्होत्रा के परिवार, 9 सितम्बर को श्री संजय सोनी के परिवार की ओर से, 10 सितम्बर को डॉ. संजीव दीवान के परिवार की ओर से तथा 11 सितम्बर को अन्तिम समापन के अवसर पर आर्य समाज मॉडल टाऊन के मन्त्री श्री अजय महाजन एवं श्री रवि महाजन जी ने अपने परिवार की तरफ से सत्संग का आयोजन किया। इस प्रकार वेद प्रचार पखवाड़े का समापन भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। यह सारा कार्यक्रम आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी की अध्यक्षता में होता रहा। इस कार्य क्रम में आर्य जनता से भरपूर सहयोग दिया। श्रावणी के इस कार्यक्रम में वेद ज्ञान की अमृत गंगा में श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाकर अपने आपको निहाल किया। आर्य समाज मॉडल टाऊन भारतवर्ष की ऐसी इकलौती आर्य समाज है जहां पर वेद प्रचार का कार्य निरन्तर चलता रहता है। हर महीने के अन्तिम रविवार को बाहर से विद्वानों को आमन्त्रित करके वैदिक सत्संग का आयोजन किया जाता है। अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी ने सभी आर्य जनों का, कार्यक्रमों में सहयोग देने वाले महानुभावों का तथा विशेष रूप से सत्संग का आयोजन करने वाले परिवारों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि आप सबके सहयोग से ही हम मिलकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ा रहे हैं। श्री अरविन्द घई जी ने विद्वानों का भी धन्यवाद किया। अन्त में शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

अजय महाजन मन्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**